

92.12.17

पत्रावली वास्ते आदेश प्रस्तुत ।

संक्षेप में प्रकरण के तथ्य इस प्रकार हैं कि ग्राम सिंगडोला बडा में आराजी ख0नं0 92 रकबा 2-88 हैक्टर बाबत अदालत मातहत में अपीलान्ट ने दावा पेश किया । जिसे बाद सुनवाई डिक्री किया गया । जिसके अनुसार राजस्व रेकार्ड में अमल दरामद हो गया । अदालत मातहत के निर्णय एवं डिक्री दि0 23-7-2002 के विरुद्ध अदालत हाजा में त्रिलोकचन्द बनाम घासीराम आदि मु0सं0 120/2014 पेश की जिसको छठ दिनांक 21-7-2016 को स्वीकार कर अदालत मातहत के निर्णय एवं डिक्री को निरस्त कर प्रकरण अदालत मातहत को इस निर्देश के साथ



प्रकरण अधिकारी एवं  
पतेम राव अपील अधिकारी  
साकर

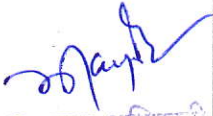
सत्यमेव जयते

Web Copy - Not Official

दिनांक	आज्ञा पत्र	
22-12-17	<p>भी नहीं देखा गया कि तथाकथित पूर्व खातेदारान का देहान्त हो चुका है तथा उनके वारिसान वाद में मौजूद होते हुये भी उन्हें साक्ष्य सबूत पेश करने का अवसर न देकर आदेश पारित किया है। रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 अदालत मातहत में पक्षकार भी नहीं था वह दावे में बिना पक्षकार बने ही धारा-144 का प्रार्थना पत्र पेश किया है जबकि कानूनन उसे पहले दावे में पक्षकार बनकर ही कार्यवाही करनी चाहिये थी। जबकि धारा-144 सीपीसी का प्रार्थना पत्र भी आर आर टी 2015 11 पेज-29 में स्पष्ट किया गया है कि यह प्रार्थना पत्र डिक्री की तरह ही अलग से दर्ज होकर डिक्री तरह ही यह सम्पादित किया जावेगा किन्तु अदालत मातहत ने नियत पेशी जो माननीय न्यायालय ने नियत की थी उसका इन्तजार किये बिना अपीलान्ट को बिना सुने ही इस प्रार्थना पत्र का निर्णय कर दिया जो प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्त के विपरित है। अतः अपीलान्ट की अपील स्वीकार कर अदालत मातहत का निर्णय निरस्त किया जावे।</p>	

विद्वान वकील रैस्पोंडेन्ट ने बहस में कथन किया कि अदालत मातहत का निर्णय उचित एवं विधिक है। माननीय न्यायालय द्वारा अदालत मातहत के निर्णय एवं डिक्ली को निरस्त किया गया। अर्थात् जिस डिक्ली से राजस्व रेकार्ड तैयार हुआ वह डिक्ली निरस्त हो गई तो न्यायालय को यह इन्द्राज तो अपने आप ही दुरुस्त कर देना चाहिये जैसा आर आरडी 1991 पेज 18 में स्पष्ट किया गया है। इसमें अपीलान्ट को सुनने का कोई औचित्य नहीं बताया है। अदालत मातहत ने अपना निर्णय सही पारित किया है। अपीलान्ट की अपील को खारिज किया जावे।

बहस बगौर समाप्त की गई। पत्रावली का अवलोकन किया गया। अदालत मातहत ने दिनांक 23-7-2002 को दावा डिक्ली किया जिसमें ख0नं0



सुपरीम कोर्ट दिल्ली

पतेस राव अमीर अमीर  
साकर

क० ॥॥॥॥

क० ॥॥॥॥

